# MP Board Class 9th Hindi Navneet Solutions पद्य Chapter 4 नीति – धारा

बोध प्रश्न

### अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
सच्चे मित्र की क्या पहचान है?
उत्तर:
सच्चा मित्र वही होता है जो विपत्ति में साथ दे।

प्रश्न 2.
अमरबेल का पोषण कैसे होता है?
उत्तर:
अमरबेल एक विशेष प्रकार की पीले रंग की बेल होती है जिसमें न जड़ होती है और न पत्ते। उस बेल को भी ईश्वर सींचता रहता है।

प्रश्न 3.
रहीम ने बुरे दिनों में चुप रहने की बात क्यों कही है?
उत्तर:
रहीम ने बुरे दिनों में चुप रहने की सलाह इसलिए दी है कि बुरे दिनों में यदि आप किसी से अटकोगे तो उससे आपको हार माननी पड़ेगी।

प्रश्न 4.
वृन्द के अनुसार मूर्ख विद्वान् कैसे बन सकता है?
उत्तर:
वृन्द कवि के अनुसार मूर्ख व्यक्ति भी यदि निरन्तर अभ्यास करे तो वह विद्वान् बन सकता है।

### लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
"रहिमन भंवरी के भये नदी सिरावत मौर" से क्या आशय है?
उत्तर:
रहीम कवि कहते हैं कि काम निकल जाने पर व्यक्ति महत्त्वपूर्ण बातों और व्यक्तियों का असम्मान करते हैं, जैसे भाँवर पड़ने से पूर्व दूल्हा के मौर की बड़ी इज्जत की जाती है और जब भाँवर पड़ जाती है तब उसका तिरस्कार कर उसे नदी में बहा दिया जाता है।

प्रश्न 2.
"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" कवि ने किस सन्दर्भ में कहा है?
उत्तर:

अच्छे वृक्ष के पत्ते प्रारम्भ में बड़े ही चिकने होते हैं। जिस वृक्ष के पत्ते प्रारम्भ में चिकने होते हैं वही वृक्ष कालान्तर में भली-भाँति पल्लवित एवं पुष्पित होता है। उसी प्रकार जो बालक बचपन में अच्छे व्यवहार करता है वह एक दिन महान् व्यक्ति बनता है। कहा भी गया है कि पूत के पाँव पालने में ही दिखाई दे जाते हैं।

प्रश्न 3.
अधिक परिचय बढ़ाने के विषय में कवि वृन्द के क्या विचार हैं?
उत्तर:
अधिक परिचय बढ़ाने को कवि वृन्द अच्छा नहीं मानते हैं। उनका अनुभव है कि अधिक परिचय से एक-दूसरे के प्रति असम्मान का भाव उत्पन्न होता है। जैसे कि मलय पर्वत पर रहने वाली भीलनी चन्दन के पेड़ का महत्त्व न जानकर उसे साधारण लकड़ी के रूप में जला देती है।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
कौए और कोयल की पहचान कवि के अनुसार स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
कौआ और कोयल दोनों का वर्ण एवं आकार-प्रकार एक जैसा ही होता है। बसंत ऋतु आने पर दोनों का अन्तर सरलता से ज्ञात हो जाता है। कौआ अपनी कर्कश ध्वनि में काँव-काँव करता है और कोयल अपनी मधुर बोली से सबको आकर्षित कर लेती है। इसी प्रकार बोली एवं व्यवहार से दुष्ट और सज्जन लोगों की पहचान हो जाती है।

प्रश्न 2.
सबल की सब सहायता करते हैं, निर्बल की कोई सहायता नहीं करता है। उदाहरण देकर समझाइए।
उत्तर:
जिस प्रकार प्रचण्ड आग (सबल) को हवा और बढ़ा देती है, किन्तु वही हवा दीपक की लौ (निर्बल) को क्षण भर में बुझा देती है, अत: यह कहा जा सकता है कि सबल की सब सहायता करते हैं, निर्बल की कोई नहीं करता है।

प्रश्न 3.
निम्नलिखित दोहों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए
(अ) खीरा सिर तें ..... यही सजाय॥
उत्तर:
रहीम कहते हैं कि खीरा का सिर काटकर उस पर नमक लगाकर रगड़ा जाता है ताकि उसके अन्दर का जहर बाहर निकल जाए। उसी तरह कड़वे वचन बोलने वाले व्यक्ति को भी सिर काटकर सजा देनी चाहिए।

(आ) कदली सीप ..... फल दीन॥
उत्तर :
कविवर रहीम कहते हैं कि मनुष्य जैसी संगत करेगा उसका फल भी उसको वैसा ही मिलेगा। कवि उदाहरण देते हुए कहता है कि स्वाति नक्षत्र में बादलों से टपकने वाली बूंद तो एक ही होती है पर संगत के प्रभाव से उसका प्रभाव अलग-अलग पड़ता है अर्थात् यदि वह केले के पत्ते पर गिरेगी तो कपूर बन जाएगी, सीप में गिरेगी तो मोती बन जाएगी और सर्प के मुख पर गिरेगी तो मणि बन जाएगी।

(इ) उद्यम कबहुँ न ..... देखि पयोद॥
उत्तर :
कविवर वृन्द कहते हैं कि भविष्य में कुछ अच्छा होने की आशा की खुशी में मनुष्य को अपने परिश्रम (प्रयत्न) को

https://www.evidyarthi.in/

शिथिल महीं कर देना चाहिए। उदाहरण देते हुए कवि कहते हैं कि घुमड़ते हुए बादलों को देखकर उनसे प्राप्त होने वाले पानी की खुशी में अपने घर में रखी हुई पानी की गागर को नहीं फोड़ देना चाहिए।

(इ) करत-करत..... निसान॥
उत्तर:
कवि वृन्द कहते हैं कि हमें जीवन में सदैव अभ्यास करते रहना चाहिए। निरन्तर अभ्यास करने से जड़मति अर्थात् मूर्ख व्यक्ति भी चतुर हो जाते हैं। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि कुएँ पर रखी शिला (बड़े पत्थर) पर भी जब लोग पानी खींचते है तो उस पत्थर पर रस्सी की बार-बार रगड से बड़े-बड़े गड्ढे बन जाते हैं। कहने का भाव यह है कि जब पत्थर जैसा कठोर पदार्थ भी बार-बार के अभ्यास से अपना रूप बदल लेता है तो चेतन व्यक्ति तो निरन्तर के अभ्यास से अवश्य ही चतुर बन जाएगा।

## काव्य-सौन्दर्य

प्रश्न 1.
निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के दो-दो अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए
मूल, कुल, फल, रस।
उत्तर:
मूल :

1. मूलधन,
2. जड़।

वाक्य प्रयोग :

1. व्यापारी अपने मूलधन को कभी नहीं छोड़ता है।
2. इस वृक्ष की मूल पाताल तक गई है।

कुल :

1. सम्पूर्ण
2. वंश।

वाक्य प्रयोग :

1. इस व्यापार में कुल पूँजी 5 अरब रुपये लगी है।
2. कुल से ही व्यक्ति की पहचान होती है।

फल :

1. वृक्ष का फल
2. परिणाम।

वाक्य-प्रयोग :

1. इस वर्ष आम के पेड़ फलों से लदे हैं।

2. मोहन का परीक्षाफल अभी नहीं आया है।

रस :

1. पेय
2. सार।

वाक्य-प्रयोग :

1. गन्ने का रस स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।
2. निर्धनता में मानव जीवन का रस ही सूख जाता है।

प्रश्न 2.
निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए
उत्तर:

| शब्द | विलोम |
|---|---|
| दिन | रात |
| मित्र | शत्रु |
| सुख | दुःख |
| अच्छे | बुरे |
| अनादर | आदर |
| सबल | निर्बल |
| अरुचि | रुचि |
| नीच | ऊँच |

प्रश्न 3.
निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-
पवन, पयोद, आग, कंचन, मोर।
उत्तर:
पवन – वायु, वात, हवा।
पयोद – नीरद, जलद, वारिद।
आग – अग्नि, पावक, दहक।
कंचन – स्वर्ण, सोना, कनक।
मोर – मयूर, सारंग, केकी।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 4.
निम्नलिखित सूक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए(अ) बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
उत्तर:
आशय :
कवि कहता है कि यदि कभी कोई बात बिगड़ जाती है तब फिर लाख कोशिश करने पर भी वह बनती नहीं है। जैसे दूध जब फट जाता है तो लाख कोशिश करने पर भी उसमें से मक्खन नहीं निकलता है। अतः मनुष्य को कभी भी ऐसा मौका नहीं देना चाहिए जिससे कि बात बिगड़ जाए।

(आ) एकै साधै सब सधै, सब साधे सब जाय।
उत्तर:
आशय-इस सूक्ति का आशय यह है कि हमें पूरी निष्ठा के साथ एक का ही सहारा लेना चाहिए। इधर-उधर भागने से अथवा दस आदमियों से अपनी परेशानी कहने से कोई बात नहीं बनती है। हमें एक पर ही भरोसा रखना चाहिए, इससे हमारा काम अवश्य ही बनेगा।

(इ) रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।
उत्तर:
आशय-इस सूक्ति का आशय यह है कि अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानी हो जाता है जैसे कि कुएँ के ऊपर की बड़ी चट्टान भी रस्सी जैसे कोमल वस्तु से घिस जाया करती है।

प्रश्न 5.
निम्नलिखित लोकोक्तियों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए
(i) होनहार बिरवान के होत चीकने पात।
उत्तर:
अच्छे वृक्ष के पौधे में चिकने पत्ते होते हैं। कहने का भाव यह है कि महान् मनुष्य की पहचान उसके बचपन के क्रियाकलापों से ही हो जाती है। कहा भी है कि पूत के पाँव पालने में दिखाई दे जाते हैं।

(ii) तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर।
उत्तर:
मनुष्य को अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करना चाहिए। रमेश के पास पचास रुपये की पूँजी थी लेकिन वह लाखों के बजट बना रहा था। इस पर उसके पिताजी ने उसे समझाया कि बेटा उतने ही पैर पसारो जितनी लम्बी तुम्हारी रजाई है।

(iii) ज्यौं-ज्यौं भीजै कामरी, त्यौं-त्यौं भारी होय।
उत्तर :
हठ या जिद करने से कोई काम बनता नहीं है अपितु बिगड़ जाता है। कहा भी है कि जैसे-जैसे कम्बल भीगता जाएगा वैसे ही वैसे वह भारी होता जाएगा।

प्रश्न 6.
इन पंक्तियों की मात्राएँ गिनकर, छन्द की पहचान कीजिए।
उत्तर:

काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
ऽ । ।ऽ । ।ऽ । ऽ ऽ । ।ऽ । । ऽ ।
रहिमन भँवरी के भये, नदी सिरावत मौर॥
। । । ।।ऽ ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । । ऽ ।
यह दोहा छन्द है, 13 + 11, 13 + 11 = 48 मात्राएँ हैं।

प्रश्न 7.
हिन्दी में कई कवियों ने मुक्तक काव्य लिखे हैं। आप कुछ मुक्तक काव्यों के नाम उनके रचनाकारों के नाम के साथ लिखिए।

उत्तर:

| मुक्तक काव्य | रचनाकारों के नाम |
|---|---|
| 1. रैदास के पद | रैदास |
| 2. सोरठा के पद | मीरा |
| 3. सूर सागर | सूरदास |
| 4. विनय पत्रिका | तुलसीदास |
| 5. सुजान रसखान | रसखान |
| 6. प्रेम-वाटिका | रसखान |
| 7. साखी, सबद, रमैनी | कबीर |
| 8. सूर सारावली | सूरदास |
| 9. साहित्य लहरी | सूरदास |
| 10. बिहारी सतसई | बिहारीलाल |

https://www.evidyarthi.in/